ॐ

गायत्री

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम

रामपुरा, रेवाड़ी ।

५००० गायत्री राय बहादुर रामरत्न जी

ने वितरणार्थ छपवाई

मुद्रक तथा प्रकाशक

भूमानन्द ब्रह्मचारी " भक्ति प्रेस "

भगवद्भक्ति आश्रम, रेवाड़ी ।

प्र० संस्करण १००००

द्वि-संस्करण १०००० संवत् १९९२

* ॐ *

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

ओं=सर्वव्यापक, सबकी रक्षा करने वाले,

भूः=सत्तास्फूर्ति देने वाले सत्य स्वरूप परमात्मा,

भुवः=सर्व दुखों के नाशक, चैतन्य स्वरूप और ज्ञान स्वरूप,

स्वः=हे सुख स्वरूप, सबको सुख देने वाले,

तत्=अनन्त अपार पर ब्रह्म,

सवितुः=सब जगत् के उत्पन्न करने वाले, प्रेरणा करने वाले, पवित्र करने वाले सविता देव,

वरेण्यम्=भजनीय, उपासनीय, वर्णन करने योग्य, तारीफ के लायक

भर्गो=हे सब पापों के भर्जन नाश करने वाले शुद्ध तेज स्वरूप, ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमात्मा,

देवस्य=ज्ञान, आनन्द और प्रकाश के देने वाले, विजय कराने वाले, दिव्य स्वरूप, पूर्वोक्त गुण युक्त ऐसे आप परमात्मा का

धीमहि=हम ध्यान करते हैं. हम तुम्हारी शरण होते हैं हम में हम पना आप ही हैं।

यः=वह परमात्मा

नः=हमारी

धियः=बुद्धियों को

प्रचोदयात्=धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में प्रेरणा करे। संसार से हटा कर अपने स्वरूप में लगावे और शुद्ध बुद्धि और प्रेम रूपी भक्ति प्रदान करे।

गायत्री मन्त्र सब मन्त्रों में बड़ा है। इस मन्त्र का स्वयं परमात्मा ने ब्रह्मादि ऋषि मुनियों को उपदेश किया है। मनुष्य ऐसा कल्याण कारी मन्त्र अब तक नहीं बना सका है। इस मन्त्र में भगवान् के ओं, भूः, भुवः, स्वः, तत्, सवितः, वरेण्यम्, भर्गः, और देव, यह नौ नाम

हैं। इन नौ नामों पर नौ श्लोक भी हैं। नौका में बैठकर जैसे नदी से पार होते हैं वैसे ही नौ नामों के जपने से संसार सागर को पार कर मुक्ति को प्राप्त होते हैं। नौ नामों में ही भगवान् की स्तुति इसलिये की गई है कि इन नौ नामों में भगवान् के अनन्त नाम आजाते हैं क्योंकि गिनती नौ तक ही है। आगे तो एक पर ही शून्य रखदिया जाता है। चारों वेदों में यह मन्त्र समान रूप से आया है। इस मंत्र से प्रातः काल, मध्याह्न काल, सायंकाल और अर्द्ध रात्रि के समय इस प्रकार चार वार सन्ध्या करनी चाहिये। अर्द्ध रात्रि के समय सन्ध्या करने के लिये जब मनुष्य उठेंगे तो उनके घरों में चोरी आदि कोई बुरे काम न होंगे क्योंकि यह कर्म आधी रात के लगभग ही होते हैं। उस समय सन्ध्या निमित्त जाग हो जायगी। रात्रि को भजन करके जब सोयेंगे तब बहुत अच्छे स्वप्न आवेंगेऔर बहुत लाभ होगा। उपनिषद् में कहा है:-

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ॥

प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ॥
सायंप्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति ॥
निशीथे तुरीय सन्ध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति ॥

गायत्री का सायंकाल में जप करने वाला दिनमें किये पापों का नाश करता है। प्रातः काल में जप करने वाला रात्रि में किये हुवे पापों का नाश करता है। दोनों समय जप करने वाला निष्पाप होता है। मध्य रात्रि में जप करने से वाक् सिद्धि प्राप्त होती है।

गायत्री मन्त्र का सविता देवता है। अग्नि मुख है, विश्वामित्र ऋषि है, गायत्री छन्द है और उपनयन, प्राणायाम और जपमें विनियोग (इस्तेमाल) है। यह मन्त्र आदि मन्त्र है। भगवान् के भजन में स्तुति, प्रार्थना और उपासना यह तीन बातें होनी चाहियें। यह ऐसा मन्त्र है कि इस एक

ही मन्त्र में स्तुति, प्रार्थना और उपासना यह तीनों बातें हैं। ओं भूर्भुवः स्वः आदि नौ नामों में भगवान् की स्तुति की गई है। 'धीमहि' में उपासना (ध्यान) है। 'धीमहि' से भगवान् का ध्यान इस प्रकार करेः "योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहमस्मि ओं खं ब्रह्म" कि जो सूर्य में स्वर्ण जैसे रंग का प्रकाश स्वरूप पुरुष है वह मैं हूं। 'धियो यो नः प्रचोदयात्' यह प्रार्थना है। इससे भगवान् से शुद्ध बुद्धि और परा भक्ति की प्रार्थना करे इस मंत्र में पांच अवसान हैं। 'ओ३म्' यहां पर प्रथम अवसान है, 'भूर्भुवः स्वः' पर दूसरा, 'तत्सवितुर्वरेण्यम्' पर तीसरा, 'भर्गो देवस्य धीमहि' पर चौथा और 'धियो यो नः प्रचोदयात्' यहां पर पांचवां अवसान है। प्रत्येक अवसान पर मन्त्र जपते समय कुछ ठहर कर अर्थ का चिन्तन करता हुवा मन्त्र जपे

समस्त मुसलमानों का एक मन्त्र (कलमा)

है। जिस जाति का एक मन्त्र नहीं है उसका संगठन नहीं हो सकता। भगवान् वेद में आज्ञा करते हैं कि 'समानो मन्त्रः' तुम्हारा मन्त्र समान अर्थात् एक हो। अतः सबका एक मन्त्र होना चाहिये।

सारभूतास्तु वेदानां गुह्योपनिषदो मताः।
ताभ्यः सारस्तु गायत्री तिस्रो व्याहृतयस्तथा॥

चारों वेदों का सार उपनिषद् हैं और उपनिषदों का सार गायत्री है। इसलिये गायत्री ही एक ऐसा मन्त्र है जो सबका एक मन्त्र हो सकता है। जो गायत्री को नहीं जानता वह चारों वेदों का पारगामी भी क्यों नहीं हो शूद्र के समान है।

'या सन्ध्या सैव गायत्री'।

शास्त्रों में गायत्री को ही सन्ध्या कहा है।

'गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यतः'।

इसका नाम गायत्री इसलिये है कि यह गाने वाले को संसार सागर से पार कर देती है।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम्॥

यह मन्त्र वेद की माता है, पाप नष्ट करने वाला है। इस मन्त्र के अतिरिक्त भूलोक तथा स्वर्ग लोक में पवित्र करने वाला और मन्त्र नहीं है।

मनु भगवान् ने कहा है कि विधि यज्ञ से जप यज्ञ दश गुणा फलदायक है, इसमें भी जिसमें होठ ही हिलें शतगुणा और मानसिक सहस्र गुणा फल देता है। लेटा लेटा, बैठा बैठा, डोलता फिरता जिसभी अवस्था में हो मनुष्य गायत्री का मानसिक जप कर सकता है। इसके जपने में किसी प्रकार का भी दोष नहीं है। पुण्य ही पुण्य है। इसके जपने से सब कामना पूरी होती हैं और अन्त में स्वर्गधाम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। अर्थ सहित चाहे एक भी मन्त्र दिन में चार बार जपो वह भी कल्याण का देने वाला है। वेद का मन्त्र है, भगवान् की आज्ञा है, इससे पाप नष्ट होते हैं और ज्ञानका प्रकाश होता है।